Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college Darbhanga

Economics D.U. Hons LECTURE 10

व्यापार-चक्र BUSINESS CYCLE

व्यापार चक्र से हमारा अभिप्राय पूँजीवादी देशों में आर्थिक क्रियाओं के उन उतार-चढ़ाव से होता जो पर्याप्त निश्चित अवधि के पश्चात बार-बार होते रहते हैं। विकसित देश जैसे अमेरिका व ब्रिटेन ने विगत दो शताब्दियों में समान आर्थिक प्रगति की है। परन्तु यह आर्थिक प्रगति विभिन्न आर्थिक उतार-चढ़ाव के साथ सम्पन्न हुई है। यद्यपि इन देशों में आर्थिक प्रगति के फलस्वरूप राष्ट्रीय आय में दीर्घ-कालीन प्रवृत्ति बढ़ने की रही है। परन्तु विभिन्न वर्षों में राष्ट्रीय आय में उतार चढ़ाव भी आते रहे हैं। इन आर्थिक उतार-चढ़ाव को ही व्यापारिक-चक्र कहते हैं। अतः व्यापारिक चक्र अपना आर्थिक उतार-चढ़ाव से हमारा तात्पर्य उत्पादन आय, रोजगार और कीमतों में अल्पकालीन उतार-चढ़ाव या उच्चावचनों से है।

ऊँची आय, अधिक उत्पादन और अधिक रोजगार के काल को समृद्धि का काल कहा जाता है। और कम आय, कम उत्पादन तथा कम रोजगार के काल को मंदी का काल कहा जाता है। इन उतार-चढ़ावों का एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि एक विशेष क्रम के साथ तथा नियमानुसार होते हैं।

व्यापार चक्र की कोई उचित परिभाषा देना सरल कार्य नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि व्यापार-चक्र की कोई संक्षिप्त परिभाषा दी जाय जिसे कि इसी प्रकार के अन्य उतार-चढ़ाव से पृथक किया जा सके। अमेरिका में आर्थिक अनुसंधान कार्यालय ने व्यापार-चक्र के क्षेत्र में अनेक अध्ययन के उपरान्त प्रसिद्ध अमेरिकी अर्थशास्त्री म्लेनर मिचेल द्वारा दी गयी व्यापार-चक्र की परिभाषा को उपयुक्त बताया है।

व्यापार-चक्र की परिभाषा विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गयी है जो निम्नलिखित हैं।

1. प्रो० मिचेल के अनुसार "व्यापार-चक्र इस प्रकार के उतार-चढ़ाव को कहते हैं जो विकसित व्यवसाय संगठन वाले समाजों की सम्पूर्ण आर्थिक क्रियाशीलता में पाए जाते हैं। व्यापार-चक्र में सामान्य विस्तार की अवस्था में लगभग समान समय पर बहुत सी आर्थिक कार्यशीलताओं में विस्तार रहता है। उसके बाद सामान्य सुस्ती गिरावट तथा मंदी की अवस्था आ जाती है जो अगले व्यापार-चक्र के विस्तार अवस्था में मिल जाती है। परिवर्तनों का यह चक्र आवर्तीय होता है, परन्तु यह सामयिक नहीं होता है।"

2. अर्थशास्त्री कीन्स के अनुसार "व्यापार चक्र से आशय अच्छे व्यापार समय जो बढ़ते मूल्य एवं निम्न रोजगार प्रतिशत को बताता है एवं इसके विपरीत बुरे व्यापार समय, जो गिरते मूल्य एवं ऊँचे रोजगार प्रतिशत द्वारा प्रदर्शित होता है, से लगाया जाता है।"

Scanned by CamScanner

3. गार्डे के अनुसार " विशेष प्रकार के उच्चावचन व्यापार-चक्र कहलाते हैं क्योंकि एक दिशा में अधिक गतिशीलता न केवल अपने प्रभाव ही प्रस्तुत करती है बल्कि दूसरी दिशा में गतिशीलता की आरम्भ को प्रोत्साहित करती है। "

4. हेबरलर के अनुसार " सामान्य अर्थों में व्यापार-चक्र को प्रगति पथ या मंदी पथ में अच्छे एवं बुरे व्यापार के उपाय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। "

5. हेन्सन के अनुसार " व्यापार-चक्र अर्थव्यवस्था के औद्योगिक ढाँचे का विशेष दर्पण है, जिसे उच्च स्तरीय संगठित आधुनिक समाज में तेजी व मंदी अन्य समुदायों में पुनर्वितरित होती रहती है। "

6. जे. टिनबर्जन के अनुसार " व्यापार-चक्र उच्चावचनों के मध्य का एक खेल है और एक आर्थिक पद्धति इन उच्चावचनों के चक्रम सामयोजित विस्तार के प्रदर्शित करने में सफल हो जाती है। "

7. प्रो० बेन्हम के अनुसार " व्यापार-चक्र वैभव एवं सम्पन्नता का ऐसा काल है जिसके पश्चात मंदी या अवसाद का आना स्वाभाविक हो जाता है। "

इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यापार-चक्रों से हमारा अभिप्राय पूँजीवादी देशों में आर्थिक क्रियाओं के उतार-चढ़ाव से होता है जो पर्याप्त निश्चित अवधि के पश्चात बार-बार होते रहते हैं। संक्षेप में विस्तार की एक प्रावस्था तथा संकुचन की एक प्रावस्था को मिलाकर व्यापार-चक्र कहते हैं।
व्यापार-चक्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं। व्यापार-चक्र की विशेषताओं को दो भागों में बाँट कर उसका अध्ययन किया जा सकता है।

A प्रमुख विशेषताएँ B गौण विशेषताएँ

A प्रमुख विशेषताएँ - व्यापार-चक्र की प्रमुख विशेषताएँ दो प्रकार की हैं

i. सामयिकता — व्यापार-चक्र की प्रमुख विशेषता यह है कि व्यापार का एक उतार-चढ़ाव एक चक्र में चलता है अर्थात् विस्तार व संकुचन एक दूसरे के उपरान्त नियमित रूप से मध्यान्तर काल से आते रहते हैं। इनको सामयिक चक्र कहते हैं। प्रो० टामस के शब्दों में " 19 वीं तथा 20 वीं शताब्दी के प्रथम भाग में अच्छे व बुरे व्यापार का परिवर्तन इस नियमितता से हुआ कि लोगों ने एक व्यापार का शास्त्र-चक्र मान लिया जिसका काल 7 वर्ष से 10 वर्ष तक होता है। "

ii समकालिकता — व्यापार-चक्र का स्वरूप समकालिक होता है अर्थात् उस समय देश की सभी फर्मों पर एक जैसा ही रंग चढ़ जाता है यदि वैभव काल है तो सभी फर्मों के लाभ बढ़ जाते हैं यदि मंदी काल है तो सभी फर्मों पर मंदी छायी रहती है इसको समकालिकता कहते हैं अर्थात् उद्योग के अच्छे या बुरे काल एक ही समय में सभी उद्योगों में होता है यह फैलने वाली प्रवृति किसी एक ही राष्ट्र के लोगों तक सीमित नहीं होती वरन् सम्पूर्ण संसार में फैल सकती है। यह फैलने वाली प्रवृति किसी एक ही राष्ट्र के लोगों तक ही सीमित नहीं होती वरन् सम्पूर्ण व्यवसायिक संसार में फैल जाती है। संसार के राष्ट्र

Scanned by CamScanner

इतनी अधिक एक दूसरे पर आश्रित है कि यदि एक देश में अच्छी बुरी दशाएँ दूसरे देश के व्यापार में अच्छी या बुरी दशाएँ उत्पन्न कर देती है। अन्य शब्दों में एक देश में तेजी अथवा मंदी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के द्वारा अन्य देशों में पहुँचने की प्रवृत्ति देती है।

B गौण विशेषताएँ — अमेरिकन आर्थिक सभा की रिपोर्ट ने व्यापार-चक्र की अन्य विशेषताओं पर प्रकाश डाला है जो निम्नलिखित है।

i. कृषि के अतिरिक्त शेष उत्पादन तथा कीमतें एक ही देश में गतिमान होते हैं।

ii. व्यापार-चक्र संबंधी मूलतः रोजगार, उत्पादन व कीमत स्तर से होता है। और ये तीनों निवेश से संबंधित होते हैं। इस प्रकार तेजी के काल में निवेश बढ़ता है और मंदी काल में घट जाता है।

iii. व्यापार-चक्र अर्थव्यवस्था में मौद्रिक तत्व को प्रभावित करते है तेजी की दशा में मुद्रा की मात्रा बढ़ जाती है जिसके बैंकों के द्वारा साख निर्माण की गति बढ़ा दी जाती है। और मंदी की दशा में उसमें कमी आती है। केन्स ने इसलिए मौद्रिक चक्रों का उल्लेख किया था। उत्पादन तथा रोजगार में परिवर्तन के साथ-साथ मुद्रा की मात्रा व उसकी चलन गति में परिवर्तन होता है।

iv. अर्थव्यवस्था में सभी क्षेत्र व्यापार-चक्र से समान रूप से प्रभावित नहीं होते हैं। उपभोग पदार्थों की अपेक्षा पूँजी पदार्थों पर कीये गए व्यय में उतार-चढ़ाव अधिक होता है कृषि पदार्थों की कीमतों में अधिक लचक होती है और निर्मित पदार्थों की कीमतों में कम, थोक कीमतों में परिवर्तन अधिक होता है, फुटकर कीमतों में उससे कम व मजदूरियों में और भी कम होता है। लाभ से प्राप्त आय, अन्य स्रोतों से प्राप्त आय के अपेक्षाकृत अधिक घटती-बढ़ती है। अर्थव्यवस्था पर मंदी का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक केन्द्रीत व गहरा होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यापार चक्र अपनी विशेषताओं के लिए विख्यात है। व्यापार-चक्र से हमारा अभिप्राय पूँजीवादी देशों से है उनकी आर्थिक क्रियाओं से है व्यापार में उन उतार-चढ़ावों से है जो एक निश्चित अवधि के पश्चात बार-बार होते रहते हैं। जिसमें विस्तार की एक अवस्था तथा संकुचन की एक अवस्था को मिलाकर व्यापार-चक्र कहते हैं।

Scanned by CamScanner